P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-2* (Part-1) October- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

दलित समुदाय की सामाजिक स्थिति

मोनिका गौतम
असिस्टेण्ट प्रोफेसर,
समाजशास्त्र विभाग,
महाराजा बिजली पासी
राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय,
आशियाना, लखनऊ

सारांश

दलितों को हिन्दू समाज व्यवस्था में सबसे निचले पायदान पर होने के कारण न्याय, शिक्षा, समानता तथा स्वतंत्रता आदि मौलिक अधिकारों से भी वंचित रखा गया। उन्हें अपने ही धर्म में अछूत या अस्पृश्य माना गया। दलित साहित्य की शुरुआत मराठी से मानी जाती है जहां दलित पैंथर आंदोलन के दौरान बड़ी संस्था में दलित जातियों से आए रचनाकारों ने आम जनता तक अपनी भावनाओं, पीड़ाओं, दुखों–दर्दो को लेखों, कविताओं, निबन्धों, जीवनियों, कथाओं आदि के माध्यम से पहुंचाया। बौद्ध धर्म में पाँचवे पायदान पर चांडाल है संवैधानिक भाषा में इन्हें ही अनुसूचित जाति कहा गया है। आज अधिकांश हिन्दू दलित बौद्ध धर्म के तरफ आकर्षित हुए है और हो रहे हैं, क्योंकि बौद्ध बनने से हिन्दू दलितों का विकास हुआ है।

मुख्य शब्द : दलित समुदाय, अनुसूचित जाति, मौलिक अधिकार।

प्रस्तावना

मानव सभ्यता हजारों वर्षो के सतत् सामाजिक प्रयत्नों का परिणाम है भारत वर्ष के विभिन्न क्षेत्रों में ऐसे विभिन्न मानव समूह निवास करते है। जिनका रहन–सहन अत्यन्त पिछड़ा है, वे रूढ़ियों तथा अन्धविश्वासों एवं भ्रान्तियों से ग्रसित है, समाज में बढ़ते अनैतिकता का कारण भी वही है, ये विभिन्न क्षेत्रों में शोषण का शिकार हो रहे है और आत्मनिर्भर एवं स्वालम्बी जीवन को लेकर इधर–उधर भटकते रहे है। भारत के स्वाधीन हो जाने के बाद से केन्द्रीय एवं राज्य सरकारों का यह निरन्तर प्रयास रहा है कि देश की जनता के सर्वातोन्मुखी विकास के लिए उपयुक्त अवसर सुलभ किये जाये इस प्रसंग में देश के पिछड़े हुए वर्गो के अनुसूचित जातियों तथा अनुसूचित जनजातियों की ओर विशेष ध्यान दिया गया है। उन्हें सामाजिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से उन्नत करने का प्रयास किया जा रहा है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. दलित समुदाय के जातिगत संरचना का अध्ययन करना।
2. दलित समुदाय के धार्मिक चेतना परम्पराओं और लघु परम्पराओं के पारस्परिक अन्तः क्रिया क स्वरुप को ज्ञात करना।
3. दलित समुदाय के सदस्यों की परिवर्तनशील मान्यताओं मनोवृत्तियों और धारणाओं के अध्ययन द्वारा आधुनिकीकरण के प्रति उनकी उन्मुखता का अध्ययन करना।
4. आर्थिक विकास कार्यक्रमों में दलित समुदाय की सहभागिता का अध्ययन करना।

उपकल्पना

1. संस्कृति नेतृत्व आज भी परम्परागत धार्मिक आधारों पर आधारित है।
2. वर्ग संघर्ष एवं गुटबन्दी साथ–साथ चल रही है।
3. गुटबन्दी नेतृत्व के विकास का आधार है।
4. बंद समाज खुलेपन की ओर अग्रसर है। धर्म, शिक्षा नये रोजगार आदि निम्न जातियों को भी उपलब्ध है इससे नेतृत्व का विकास उनमें हो रहा है।

भारत में दलित शब्द का प्रयोग सन् 1930–33 के दरम्यान उस समय हुआ जब सरकार ने जो जातीय निर्णय लिया उसमें "डिप्रेस्ड क्लासेस" शब्द का प्रयोग किया गया, जिसका अर्थ है "पददलित"। प्राचीन साहित्य में शूद्र, अतिशूद्र, चाण्डाल, अंत्याज, अस्पृश्य आदि शब्दों का प्रयोग किया गया है, ये सभी दलित शब्द के पुरखे है। यहाँ इस बात का उल्लेख करना आवश्यक है कि अस्पृश्य शब्द का अर्थ स्पर्श करने के लिए अपात्र होने के कारण प्रस्तुत शब्द घृणास्पद हो गया है। अतः इस शब्द के बदले कुछ विचारकों ने 'अस्पृश्य, पंचम एवं हरिजन' तथा 'बहिस्कृत' जैसे शब्दों का प्रयोग किया। ये सभी शब्द भी 'दलित' शब्द के ही समानार्थी है।

चातुर्वर्ण की उत्पत्ति के बारे में प्राचीनतम अनुमान ऋग्वेद के पुरुष सूक्त में वर्णित सृष्टि संबंधी पुराकथा में पाया जाता हैं इस संहिता के दशक मण्डल में विषयवाद में अंतर्वेशित किया गया है। लेकिन उत्तर साहित्य में और गाथा काव्य पुराण तथा धर्मशास्त्र की अनुभूतियों में भी इसे कुछ हेर–फेर के साथ प्रस्तुत किया गया है कि ब्राह्मण की उत्पत्ति आदिमानव (ब्रह्मा) के मुंह से, क्षत्रिय की उत्पत्ति भुजाओं से, वैश्य की उनकी जंघाओं से तथा शूद्र की उत्पत्ति उनके पैरों से हुई थी।

पन्द्रहवीं–सोलहवीं शताब्दी में आतंक से पीड़ित जनता को सहारा देने के लिए अनेक सन्त महात्माओं का जन्म हुआ उन्होंने धर्म की सच्ची राह दिखाकर पीड़ितों का उद्धार किया, समाज सुधार तथा दलितों द्वारा एवं अस्पृश्यता निवारण को लेकर समाज आश्रमों सोसायटियों तथा व्यक्तिगत सुधारकों ने महत्वपूर्ण कार्य किया है।

दलित समुदाय के सदस्यों के आत्म एवं चेतना के सृजन एवं विकास में सहयोगी कारकों को आधार माना है समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से दलितों के एवं सर्वहारा तथा दलितों एवं जनजाति के सदस्यों की चेतना एवं आत्म के विकास के गर्भ में भिन्न कारक कार्य करते है, जहां तक सर्वहारा की चेतना एवं आत्म के सृजन एवं विकास का प्रश्न है तो वह आर्थिक एवं राजनैतिक सत्ता की संरचना से विकसित है, पल्लवित होती है, सर्वहारा सामाजिक एवं धार्मिक रूप से वंचित नहीं होता उसे दलितों की भाँति सामाजिक प्रताड़ना, अपमान, तिरस्कार, बहिस्कार एवं निष्कासन नहीं अनुभव करना पड़ता हैं दूसरी ओर अनुसूचित जनजाति हिन्दू सामाजिक व्यवस्था के कभी अंग रहे ही नहीं है। उनकी अपनी आत्मनिर्भर सामाजिक व्यवस्था एवं संस्कृति है, अतः उन्हें भी हिन्दू समाज से किसी प्रकार का बहिस्कार एवं तिरस्कार नहीं झेलना पड़ा है।

इसके विपरीत दलित समुदाय के सदस्यों के लोगों की चेतना एवं आत्म सृजन एवं विकास के जो कारक है वे है सामाजिक वंचना, आर्थिक विपन्नता एवं राजनीतिक सत्ताविहीनता अर्थात् सर्वहारा की चेतना एवं आत्म के विकास में, मात्र आर्थिक वंचना एवं राजनैतिक सत्ता विहीनता भूमिका अदा करते है, वहीं दलितों की चेतना एवं आत्म के विकास में सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक तीनों क्षेत्रों में वंचनाये योगदान करती है।

दलित समस्या का उन्मूलन करने के लिए भारत के अनेक महानुभावों ने अपने–अपने तरीके से प्रयास किये। राजकुलोत्पन्न महान गौतम बुद्ध ने भी जाति व्यवस्था को ठुकरा दिया। भगवान बुद्ध ने अस्पृश्यों को अपने धर्म की दीक्षा दी, उन्हें अपने भिक्षु संग में शामिल कर लिया। तत्पश्चात् ग्यारहवीं शताब्दी में रामानुजाचार्य ने स्वयं स्थापित किये मठ और मंदिर अस्पृश्यों के प्रवेश के लिये खोल दिये। रामानुजाचार्य का एक प्रधान शिष्य तो अस्पृश्य जाति का ही था। चक्रधर, रामानन्द, कबीर, चैतन्य आदि ने भक्ति के क्षेत्र में एकात्मकता पर जोर दिया। उनका अनुसरण कर एक नाथ, तुकाराम, रोहितदास, चोखामेला, साधु संतों ने भक्ति पथ में समता का उपदेश दिया।

दलितों का सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक स्थिति सुधारने के लिए तथा दलितों की भागीदारी राजनीति में सुनिश्चित करने का प्रमुख कार्य डॉ0 भीमराव अम्बेडकर ने किया जिन्होंने तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था की कुरीतियों के विरुद्ध आवाज उठायी, दलित समुदाय के आन्दोलन में प्रमुख योगदान महात्मा गाँधी, शाहू जी महाराज, नारायण गुरु, पेरियार, रामास्वामी नायकर, सी0 एन0 मुदलियार, टी0 एम0 नायर, पी0 त्यागराज आदि ने दिया एवं अस्पृश्यता और सामाजिक व्यवस्था के विरुद्ध आवाज उठायी।

डॉ0 भीमराव अम्बेडकर न केवल एक व्यक्ति थे अपितु वे एक संस्था थे, उनका पूरा चिन्तन भारतीय सांस्कृतिक, राजनीतिक, नवजागरण के सशक्त अभिव्यक्ति है भारतीय राजनीतिक एवं सामाजिक संरचना पर वे मौलिक ढ़ंग से सोचते है जाति प्रथा के उद्गम और स्वरुप पर वे जीवन भर अनुसंधान करते रहे है और जाति प्रथा के उन्मूलन के तार्किक समाधान भी सुझाते रहे है।

डॉ0 भीमराव अम्बेडकर का यह सुदृढ़ मत था कि जब तक अछूत हिन्दू समाज में बना रहेगा तक तक उनका जीवन स्तर नहीं सुधरेगा और वह निरन्तर शोषित, अपमानित और अकिंचन बना रहेगा। उनका भाग्य कभी नहीं बदलेगा। कोई भी आर्थिक प्रलोभन देकर अपने धर्म में परिवर्तन कर लेगा इसका परिणाम यह होगा कि हिन्दू समाज में कभी भी क्रान्ति नहीं हो सकेगी।

डॉ0 भीमराव अम्बेडकर सृजनात्मक राजनीतिक थे, वे दलितों व निर्धनों का कल्याण चाहते थे। इसे सुनिश्चित करने के लिए वे दलितों की राजनीतिक भागीदारी के प्रबल समर्थक थे। उनका मानना था कि यदि निम्नवर्ग तथा निर्धनों को स्वतंत्रता व समानता मिल जाती है तो उनके लिये स्वराज्य मिल जाने जैसा होगा। यही कारण है कि उन्होंने भारतीय राजनीतिक को धर्म निरपेक्ष बनाने की निरन्तर चेष्ठा की और इस तत्व को भारतीय संविधान का आधार बना दिया।

निष्कर्ष

भारतीय सामाजिक ढाँचे के मूलाधार वर्ण व्यवस्था जातिवाद एवं ऊंच नीच के कारण समाज का बहुत बड़ा वर्ग सदियों से उपेक्षित रहा है। मनुष्य होने के बावजूद पशुतुल्य जिन्दगी जीने को विवश है। समाज के तिरस्कृत व्यक्तियों को कभी अनार्य, शूद्र, अंत्यज, अस्पृश्य और आज 'दलित के नाम से अभिहित किया जाता है। इस तिरस्कृत अपेक्षित वर्ग को इतनी अधिक वर्जनाओं का शिकार होना पड़ा कि अपनी जुबान तक नहीं खोल सकते थे।

राजनीतिक अस्थिरता, सामाजिक आडम्बर एवं आर्थिक शोषण आदि कारणों से मानरव की स्थिति दयनीय होती जा रही थी। साथ ही साथ देश में नये विचार, चिंतक एवं सुधारकों का उदय हो रहा था। जिनकी प्रेरणा से अपेक्षित, पीड़ित, दीन हीन दलित मानव अपनी मुक्ति के लिए प्रयत्नशील हो उठा और अपनी खोई हुई सांस्कृतिक परम्परा को पुनः आत्मसात करने लगा।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् शिक्षा के प्रति जागरुकता के कारण शनैः शनैः ही सही परन्तु पीड़ितों, अस्पृश्यों, शोषितों एवं दलितों की सामाजिक स्थित में

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-2* (Part-1) October- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

परिवर्तन आ रहा है। जाति की दीवार नष्ट हो रही है। प्रजातंत्रात्मक संविधान में उसको सभी प्रकार के अधिकार प्राप्त है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *आज का दलित साहित्य, अतिश प्रकाशन दिल्ली–2000*
2. *दलित साहित्य 2000, दिल्ली।*
3. *दलित साहित्य आन्दोलन रचना प्रकाशन जयपुर–1997।*
4. *दलित साहित्य के प्रतिमान : डॉ0 एन0 सिंह, प्रकाशक : वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012।*
5. *वीर भारत तलवार–दलित साहित्य की अवधारणा चिंतन की परंपरा और दलित साहित्य, पृष्ठ–75।*
6. *संक्षिप्त शब्द सागर–रामचन्द्र वर्मा(संपादक), नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, नवम संस्करण, 1987।*